पसीने के कारण उत्पन्न विकारों का समाधान भी है पारंपरिक चिकित्सकों के पास

* 45 प्रकार की वनौषधियों का पारंपरिक उपयोग
* हर्बल डिओडरेन्ट की अवधारणा पीढ़ीयों पुरानी

अधिक पसीने के कारण उत्पन्न होने वाली बदबू को कम करने के लिये वनौषधि राज्य छत्तीसगढ़ मे कई प्रकार की वनौषधियों का पारंपरिक उपयोग होता है। हर्बल डिओडरेन्ट की अवधारणा पीढ़ीयों से आम लोगों और पारंपरिक चिकित्सकों के बीच उपस्थित है और इसका व्यवहारिक उपयोग भी हो रहा है। राज्य में पसीने से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार के लिये घरेलू नुस्खों और वनौषधियों दोनो ही का प्रयोग होता है। 40 प्रकार के घरेलू नुस्खों और 45 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सा मे हो रहा है। राज्य मे पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने यह खुलासा किया।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे पिछले दस वर्षों से किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि बगलों मे पसीने के जमाव से उत्पन्न होने वाली दुर्गंध की चिकित्सा के लिये कई तरह की वनौषधियों का प्रयोग होता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक जामुन, जाम और आम की पत्तियों को पानी में उबालकर विशेष काढ़े का निर्माण करते है। बगलों को इस काढ़े से धोया जाता है। बिलासपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक असगंध और बच के विभिन्न पौध भागों को जलाकर राख एकत्र कर लेते हैं। इस राख से शरीर को साफ करने की सलाह पारंपरिक चिकित्सक देते हैं। ऊंटकटारा एवं भटकटैया की जड़ों को समान मात्रा मे मिलाकर उन्हे काली मिट्टी के साथ पूरे शरीर मे लगाने की सलाह गंडई - सालेवार क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक देते है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक विभिन जंगली फलों से तैयार शर्बत का सेवन भी उपयोगी मानते है। अलग-अलग मौसम मे अलग-अलग शर्बतों का उपयोग किया जाता है। ये शर्बत पसीने की दुर्गंध कम करने के अलावा शरीर के सामान्य स्वास्थ्य के लिये भी हितकारी होते हैं। हाथ-पैर और सिर के पिछले भाग मे अत्यधिक पसीना आने की समस्या का समाधान भी राज्य के पारंपरिक चिकित्सकों के पास है। आंतरिक उपचार के साथ वे वनौषधियों की सहायता से बाहरी उपचार भी करते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक बबूल और सरफोंक की पत्तियों को प्रभावित भागों मे स्नान पूर्व मलने की सलाह देते हैं। बेर की पत्तियों का भी इसी तरह प्रयोग होता है। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक तुलसी की जंगली प्रजातियों की सूखी पत्तियों का प्रयोग इसी तरह करते हैं ।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि पारंपरिक चिकित्सक उपयोगों के विषय मे पारंपरिक ज्ञान को गुप्त रखने के बजाय आम लोगों को बता देते हैं। यही कारण है यह ज्ञान सुरक्षित और लोकप्रिय बना हुआ है। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि नयी पीढ़ी के पारंपरिक चिकित्सक नयी वनौषधियों की सहायता से इस ज्ञान को समृद्ध करने मे जुटे है।